पाठ 52

1. नीकुदेमुस को कैसे पता चला कि परमेश्वर ने यीशु को भेजा है?

-क्योंकि यिशु कई ऐसे चमत्कार कर रहे थे जो सिर्फ परमेश्वर ही कर सकते थे।

2. क्या "जल से जन्म" का अर्थ "बपतिस्मा लेना" है?

-नहीं।

3. क्या बपतिस्मा हमें बचा सकता है?

-नहीं।

4. यीशु का क्या मतलब था "जल से पैदा हुआ"?

-पानी से पैदा होने का मतलब है कि हमें अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए ताकि परमेश्वर हमारे पापों से हमें शुद्ध कर सकें।

5. यीशु का क्या मतलब था "आत्मा से पैदा हुआ"?

-आत्मा से जन्म लेने का अर्थ है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर को हमारी आत्मा को एक नया जीवन देना चाहिए।

6. यीशु का क्या मतलब था, "मांस मांस को जन्म देता है, लेकिन आत्मा आत्मा को जन्म देती है?

-यिशु का मतलब था कि मांस केवल मांस को जन्म दे सकता है।

-यीशु का यह भी अर्थ था कि केवल परमेश्वर ही पवित्र आत्मा है जो मनुष्य की आत्मा को जन्म दे सकता है।

7. परमेश्वर के अनुसार दुनिया में केवल दो लोग कौन हैं?

-वे जो केवल एक बार पैदा हुए हैं, और जिनका नया जन्म हुआ है।

8. किसके परिवार में वे लोग हैं जिनका जन्म केवल एक बार हुआ है?

-वे शैतान के परिवार में हैं।

9. वे लोग किसके परिवार में हैं जिनका नया जन्म हुआ है?

-वे परमेश्वर के परिवार में हैं।

10. यीशु और पीतल के साँप कैसे थे जिन्हें परमेश्वर ने मूसा को रेगिस्तान में समान बनाने की आज्ञा दी थी?

-जैसे पीतल के सांप को खंभे पर लटका दिया जाता था, वैसे ही यीशु को भी लटका दिया जाता था।

-जैसे पीतल के साँप को देखकर इस्राएली बच गए, वैसे ही यीशु भी उन लोगों को बचाएगा जो उस पर विश्वास करते हैं।

11. परमेश्वर ने यीशु को इस दुनिया में क्यों भेजा?

-परमेश्वर ने हमें पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति से बचाने के लिए यीशु को भेजा।

12. क्या जो लोग यीशु में विश्वास करते हैं, उन्हें परमेश्वर दोषी ठहराएगा?

-नहीं।

13. जो लोग यीशु में विश्वास नहीं करते हैं उन्हें पहले से ही परमेश्वर द्वारा दोषी ठहराया गया है?

-क्योंकि वे यह नहीं मानते कि यीशु ही उद्धारकर्ता परमेश्वर है।

14. लोग परमेश्वर के वचन को क्यों नहीं सुनना चाहते हैं?

-क्योंकि वे अपने पाप से प्यार करते हैं।

-एक दिन यीशु कफरनहूम गाँव लौट आया।

आइए पढ़ें मरकुस 2:1-2

1-कुछ दिनों बाद जब यीशु फिर कफरनहूम में आया, तो लोगों ने सुना कि वह घर आ गया है।

2-इतने लोग इकट्ठे हुए कि द्वार के बाहर भी कोई जगह नहीं बची, और उस ने उन्हें वचन सुनाया।

-यीशु की शिक्षा सुनने के लिए कई लोग आए।

-यीशु ने उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाया।

-परमेश्वर का जो वचन यीशु ने सिखाया वह परमेश्वर का वही वचन है जो हम आपको अभी सिखा रहे हैं।

-परमेश्वर का वचन नहीं बदलता है।

-परमेश्वर का वचन सभी लोगों के लिए समान है।

-जैसे लोगों ने यीशु को परमेश्वर के वचन की शिक्षा देते हुए सुना, वैसे ही परमेश्वर चाहता है कि आप सुनें जैसे हम आपको परमेश्वर का वचन सिखाते हैं।

-क्योंकि यीशु एक घर में उपदेश दे रहा था, और यीशु को उपदेश सुनने के लिए बहुत से लोग आए थे, घर में और जगह नहीं बची थी।

-दरवाजे के बाहर भी कोई जगह नहीं थी।

-जैसे यीशु पढ़ा रहे थे, कुछ लोग एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को ले आए।

आइए पढ़ें मरकुस 2:3

3-कुछ लोग एक लकवे के मारे हुए को उसके पास लाए, और उन में से चार लोग उसके पास आए।

-क्या लकवाग्रस्त व्यक्ति खुद को ठीक करने में सक्षम था?

-नहीं।

-क्या लकवाग्रस्त व्यक्ति के दोस्त उसे ठीक कर पाए?

-नहीं।

-क्या कोई डॉक्टर लकवाग्रस्त व्यक्ति को ठीक करने में सक्षम था?

-नहीं।

-जैसे यह लकवाग्रस्त व्यक्ति अपने आप को ठीक नहीं कर पा रहा था, वैसे ही पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति से कोई भी अपने आप को नहीं बचा पा रहा है।

-लकवाग्रस्त आदमी के साथ पुरुषों ने क्या किया?

आइए पढ़ें मरकुस 2:4

4-चूंकि भीड़ के कारण वे उसे यीशु के पास नहीं ले जा सके, इसलिए उन्होंने यीशु के ऊपर की छत में एक छेद बनाया और उसमें से खोदकर उस चटाई को नीचे कर दिया, जिस पर लकवाग्रस्त व्यक्ति लेटा हुआ था।

-क्योंकि वहाँ बहुत सारे लोग यीशु की शिक्षा सुन रहे थे, और घर में और जगह नहीं थी, वे लोग लकवाग्रस्त व्यक्ति को घर की छत पर ले गए।

-उन्होंने घर की छत के एक छेद को तोड़ दिया, और लकवाग्रस्त व्यक्ति को यीशु के सामने अपनी सोने की चटाई पर नीचे कर दिया।

-चूंकि यहूदियों ने अपने घरों को मिट्टी और पुआल से बनी सपाट छतों से बनाया था, इसलिए लोग छत के एक छेद को तोड़ने में सक्षम थे, और लकवाग्रस्त व्यक्ति को यीशु के सामने नीचे कर दिया।

-पुरुष लकवाग्रस्त व्यक्ति को किसके पास लाए थे?

-यीशु को।

-अकेला कौन था जो लकवाग्रस्त व्यक्ति को ठीक करने में सक्षम था?

-यीशु।

-यीशु ने क्या किया?

आइए पढ़ें मरकुस 2:5

5-जब यीशु ने उनका विश्वास देखा, तो लकवे के मारे हुए से कहा, "बेटा, तुम्हारे पाप क्षमा हुए।"

-यीशु ने देखा कि लोग वास्तव में उस पर विश्वास करते हैं, और उसने लकवाग्रस्त व्यक्ति को उसके पापों को क्षमा कर दिया।

-कुछ कानून के शिक्षक थे जो घर में बैठे थे।

-जैसे ही यीशु ने लकवाग्रस्त व्यक्ति को उसके पापों को क्षमा किया, ये कानून के शिक्षक क्या सोच रहे थे?

आइए पढ़ें मरकुस 2:6-7

6-और वहाँ व्यवस्था के कितने शिक्षक बैठे हुए अपने मन में विचार कर रहे थे,

7-“ये आदमी ऐसा क्यों बोलता है? वह निन्दा कर रहा है! पापों को कौन क्षमा कर सकता है परन्तु केवल परमेश्वर?"

-कानून के शिक्षक सोच रहे थे कि केवल परमेश्वर ही पाप को क्षमा कर सकते हैं।

-क्या कानून के शिक्षक सही सोच रहे थे?

-हां।

-क्या यह सच है कि केवल परमेश्वर ही पाप को क्षमा कर सकते हैं?

-हां।

-क्या कोई मनुष्य पाप क्षमा कर सकता है?

-नहीं।

-क्या कोई पुजारी पाप क्षमा कर सकता है?

-नहीं।

-यीशु लोगों के पापों को क्षमा करने में सक्षम क्यों थे?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-कानून के शिक्षक भी यही सोच रहे थे कि यीशु ईश्वर की निन्दा कर रहा है।

-क्या कानून के शिक्षक सही सोच रहे थे?

-नहीं।

-क्या यह सच था कि यीशु परमेश्वर की निन्दा कर रहा था?

-नहीं।

-यीशु परमेश्वर की निन्दा नहीं कर रहे थे।

-क्या यीशु को पता था कि कानून के शिक्षक क्या सोच रहे थे?

आइए पढ़ें मरकुस 2:8

8-यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया, कि वे अपने मन में यही सोच रहे हैं, और उस ने उन से कहा, तुम ये बातें क्यों सोचते हो?

-हालांकि कानून के शिक्षकों ने कुछ नहीं कहा, यीशु जानता था कि वे क्या सोच रहे हैं।

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है, वह सभी लोगों के विचारों को जानता था।

-फिर, यीशु ने क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 2:9-12

9-यीशु ने कहा, "कौन सा आसान है: लकवे के मारे हुए से कहना, 'तेरे पाप क्षमा हुए,' या यह कहना, 'उठ, अपनी चटाई ले और चल'?

10 परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है," उन्होंने लकवाग्रस्त से कहा।

11-"मैं तुमसे कहता हूं, उठो, अपनी चटाई ले लो, और घर जाओ।"

12-वह उठा, अपनी चटाई ली और उन सभी को देखते हुए बाहर चला गया। इसने सभी को चकित कर दिया और उन्होंने यह कहते हुए परमेश्वर की स्तुति की, "हमने ऐसा कुछ कभी नहीं देखा!"

-यीशु ने लोगों से कहा कि उसके पास पापों को क्षमा करने का अधिकार है।

-यीशु के पास पापों को क्षमा करने का अधिकार क्यों था?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-यिशु ने लकवाग्रस्त व्यक्ति को पूरी तरह से चंगा करके ईश्वर के रूप में अपनी शक्ति दिखाई।

-यीशु बीमार लोगों को ठीक करने में सक्षम क्यों थे?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-लकवाग्रस्त व्यक्ति को केवल परमेश्वर ही ठीक कर सकते थे।

-इसके बाद ईसा कफरनहूम गांव के पास झील के पास गए।

आइए पढ़ें मरकुस 2:13-14

13-यीशु एक बार फिर झील के किनारे निकल गए। एक बड़ी भीड़ उसके पास आई, और वह उन्हें उपदेश देने लगा।

14-जब वह चल रहा था, तो उसने हलफई के पुत्र लेवी को चुंगी लेनेवाले की चौकी पर बैठे देखा। "मेरे पीछे हो ले," यीशु ने उससे कहा, और लेवी उठकर उसके पीछे हो लिया।

-जैसे ही यीशु चल रहा था, उसकी मुलाकात लेवी नाम के एक व्यक्ति से हुई।

-लेवी का दूसरा नाम क्या था?

-मत्ती।

-जब यीशु ने उसे बुलाया तो मत्ती का क्या काम था?

-मत्ती चूगीं लेने वालाथा।

-मत्ती ने रोमनों के लिए कर एकत्र किया, अपने ही लोगों, यहूदियों से कर लिया।

-क्योंकि चुंगी लेनेवालों ने अपने लोगों से कर लिया, और उन्हें रोमियों को दे दिया, यहूदी उन से बैर रखते थे।

-यहूदी भी चुंगी लेनेवालों से नफरत करते थे क्योंकि चुंगी लेनेवाले बहुत दुष्ट थे।

-कर संग्रहकर्ताओं ने यहूदियों को अधिक कर देने के लिए बाध्य किया, जिसे कर संग्रहकर्ता अपने लिए रखते थे।

-यीशु ने मत्ती को कर संग्रहकर्ता को उसके पीछे चलने के लिए बुलाया।

-यीशु ने एक चुंगी लेने वाले को उसके पीछे चलने के लिए क्यों बुलाया?

-क्योंकि मत्ती समझ गया था कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-क्योंकि मत्ती समझ गया था कि परमेश्वर सभी पापों को मौत की सजा देते हैं।

-क्योंकि मत्ती समझ गया था कि केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकता है।

-क्योंकि मत्ती समझ गया था कि यीशु ही उद्धारकर्ता है।

-कई वर्षों बाद, परमेश्वर पवित्र आत्मा ने मत्ती को परमेश्वर की बाइबल में एक पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया।

-क्योंकि मत्ती यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करके खुश था, मत्ती ने यीशु और अन्य पुरुषों को अपने घर खाने के लिए आमंत्रित किया।

आइए पढ़ें मरकुस 2:15-16

15-जब यीशु लेवी के घर भोजन कर रहा था, तो बहुत से चुंगी लेनेवाले और "पापी" उसके और उसके चेलों के साथ खा रहे थे, क्योंकि उसके पीछे बहुत से लोग थे।

16-जब फरीसी कानून के शिक्षकों ने उसे "पापियों" और चुंगी लेने वालों के साथ खाते हुए देखा, तो उन्होंने उसके शिष्यों से पूछा: "वह चुंगी लेने वालों और 'पापियों' के साथ क्यों खाता है?"

-कानून के शिक्षकों ने जो फरीसी थे, क्या कहा जब उन्होंने यीशु को मत्ती और अन्य लोगों के साथ भोजन करते देखा?

-उन्होंने कहा, "यीशु चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?"

-फरीसी नहीं मानते थे कि वे पापी हैं।

-फरीसियों का मानना था कि वे पाप के बिना थे।

-फरीसी यह नहीं समझते थे कि सभी लोग पाप में पैदा होते हैं।

-फरीसी यह नहीं समझते थे कि सभी लोगों ने परमेश्वर के खिलाफ पाप किया है।

-फरीसियों ने जो कहा, उसे सुनकर यीशु ने क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 2:17

17-यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, "चिकित्सकों को चिकित्सक की नहीं, बल्कि बीमारों की आवश्यकता है। मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।"

-यीशु ने फरीसियों से कहा कि स्वस्थ लोगों को डॉक्टर की नहीं, बीमार लोगों को जरूरत होती है।

-यीशु का क्या मतलब था?

-यिशु का मतलब था कि वह उन लोगों को बचाने नहीं आए जो नहीं जानते कि वे बीमार हैं।

-यीशु केवल उन लोगों को बचाने आए जो जानते हैं कि वे बीमार हैं।

-यहाँ एक दृष्टांत है:

-अगर कोई आदमी बीमार है लेकिन उसे पता नहीं है, तो क्या वह डॉक्टर के पास जाता है?

-नहीं।

-बीमार आदमी डॉक्टर के पास क्यों नहीं जाता?

-क्योंकि वह नहीं जानता कि वह बीमार है।

-यीशु उन लोगों को बचाने नहीं आए जो मानते हैं कि वे पाप रहित हैं।

-यीशु किसे बचाने आए थे?

-यीशु केवल उन लोगों को बचाने के लिए आए जो जानते हैं कि उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है, और केवल परमेश्वर ही उन्हें बचा सकता है।

-आप क्या सोचते हो?

-क्या आप जानते हैं कि आप पाप में पैदा हुए थे?

-क्या आप जानते हैं कि आपने परमेश्वर के खिलाफ पाप किया है?

-क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर सभी पापों को अनन्त मृत्यु की सजा देते हैं?

-क्या आप जानते हैं कि केवल उद्धारकर्ता परमेश्वर ही आपको बचा सकता है?

-यदि आप यह जानते हैं, तो यीशु ने कहा कि वह संसार में आपका उद्धारकर्ता बनने आया है।